http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2024) वर्ष 4, अंक 1, 30-33

Article ID: 364

जीरो बजट (शून्य लागत) प्राकृतिक खेती

डॉ. हरिकेश[1], डॉ. दिलीप कुमार तिवारी[2]

[1]सहा. प्राध्यापक (प्रवक्ता) सस्य विज्ञान विभाग , आशा भगवान बक्श सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय पूरा बाजार, अयोध्या, उ.प्र.

[2]सहायक प्राध्यापक, श्री परमहंस शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय विद्या कुंड अयोध्या

शून्य लागत प्राकृतिक खेती के जनक पद्मश्री कृषि ऋषि श्री सुभाष पालेकर जी हैं। इस पद्धति से खेती करने पर किसान भाइयों को रासायनिक खाद, जैविक खाद एवं कीटनाशक आदि खरीदने की आवश्यकता नही पड़ती। इस पद्धति में आपको केवल 10 प्रतिशत पानी और 10 प्रतिशत बिजली की आवश्यकता होती है साथ ही साथ आप सिंचित और असिंचित दोनों दशाओं में खेती कर सकते हैं। इस पद्धति से एक देशी गाय से 30 एकड़ भूमि पर खेती की जा सकती है।

इस पद्धति के कुछ महत्वपूर्ण विन्दुः–

- मुख्य फसल की लागत मूल्य अन्तरवर्ती/सह–फसलों के उत्पादन से निकाल लेना एवं मुख्य फसल शुद्ध मुनाफे के रूप में लेना।
- जो भी संसाधन आवश्यक होते हैं उनको निर्मित अपने खेत–घर में ही करना।
- जो भी संसाधन हम उपयोग में लायेंगे वो जीव, जमीन, पानी एवं पर्यावरण आदि का नुकसान करने वाले नही होने चाहिये।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती के चार मुख्य स्तम्भ हैं :–

1. जीवामृत
2. बीजामृत
3. आच्छादन
4. वाफसा

1. जीवामृतः

जीवामृत बनाने की विधिः–

- 200 लीटर पानी लें उसमें 5–10 लीटर गो मूत्र मिलायें।
- 10 किलोग्राम देशी गाय का गोबर + 1 किलोग्राम गुड़ + 1 किलोग्राम बेसन (चना, लोबिया, अरहर का) मिलायें।
- खेत के मेंड़ या फसल के जड़ से चिपकी हुई एक मुट्ठी मिट्टी मिलायें।

इस घोल को घड़ी की सूई की दिशा में लकड़ी के डण्डे के सहायता से धीरे–धीरे घोलिये। इसके पश्चात बोरी से ढक कर रात–भर रहने दें। घोल को बारिश के पानी व प्रकाश से बचायें। अब इस घोल को 48 घण्टे तक खुले स्थान पर रखें। अगर शीत लहर है तो 4 दिन तक रहने दें। सुबह–शाम एक मिनट के लिये घड़ी की सूई की दिशा में घोलिये। 48 घण्टे के बाद अथवा 4 दिन बाद उपयोग करें। किसान भाई यहॉ यह अवश्य ध्यान दे कि जीवामृत तैयार होने के बाद 14 दिन तक इसका उपयोग कर सकते हैं। परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि सर्वोत्तम परिणाम 7 से 10 दिन तक ही मिलते हैं।

नोटः–

- कम दूध देने वाली देशी गाय का गोबर + गौ मूत्र अधिक प्रभावी होता है। गौ

मूत्र जितना पूराना हो उतना ही अच्छा व गाोबर जितना ताजा हो उतना ही बेहतर माना जाता है।

- सिर्फ देशी गाय का गौ मूत्र हो तो सर्वोत्तम अथवा देशी बैल भी है तो आधा गाय और आधा बैल का चल सकता है। किन्तु केवल बैल का नही चलेगा। भैंस व विदेशी नस्लों की गायों का मूत्र वर्जित है।

जीवामृत का प्रयोग कैसे करें:–

- जीवामृत का प्रयोग सिंचाई के पानी के साथ कर सकते हैं।
- जीवामृत को भूमि की सतह पर दो पौधों के बीच में अथवा दो पंक्तियों के बीच में दे सकते है।
- खड़ी फसल पर छिड़काव के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। खरीफ, रबी एवं जायद मौसम की फसलों के लिये बारिश काल में एक–एक कप प्रति पौधा दो पौधों के बीच में भूमि के सतह पर महीने में एक या दो बार डालें।
- वर्षा समाप्ति के उपरान्त सिंचाई के समय प्रति एकड़ 200 लीटर जीवामृत पानी के साथ दें।
- खेत में नमी न होने पर शाम के समय प्रयोग करें।

5. बीजामृत बनाने की विधि (100 किलोग्राम बीज संस्कार के लिये)

100 किलोग्राम बीज + 20 लीटर पानी + 5 लीटर देशी गौ मूत्र + देशी गाय का 5 किलोग्राम ताजा गोबर + 50 ग्राम खाने का चूना + एक मटकी खेत के मेंड़ की या फसल के जडत्र के पास की मिट्टी मिलायें फिर उसे किसी लकड़ी की डण्डी से घड़ी की सूई की दिशा में धीरे–धीरे मिलायें इसके पश्चात उसे बोरी से ढक कर रात भर रखें और अगले दिन बीज संस्कार करें।

प्रयोग विधि:–

1. घास बर्गीय + तिलहन की फसलों के लिये बीज को फर्श/देशी गाय के गाबर से लिपी हुई भूमि पर बिछा कर बराबर मात्रा में बीजामृत छिड़क कर हाथ से मलकर छाया में सुखा लें फिर बुवाई करें।
2. गन्ना/केला/आलू/हल्दी/अदरक आदि के लिये बीज को बांस की टोकरी में रखकर टोकरी को बीज सहित कुछ क्षणों के लिये बीजामृत में डुबोकर निकाल लें फिर बीज लगाायें।
3. पौधशाला के पौधों के जड़ों को बीजामृत में डुबोकर रोपाई करें।

4. आच्छादन:

भूमि की जीवता और उर्वराशक्ति को सुरक्षित और संरक्षित का कार्य आच्छादन करता है। देशी केचुओं और सूक्ष्म जीवाणुओं के गतिविधियों के लिये एक विशिष्ट परिस्थिति की आवश्यकता होती है तथा इन जीवाणुओं को लू/शीतलहर/तेज बारिश तथा अन्य वाह्य शत्रु आदि से सुरक्षा के लिये आच्छादन की आवश्यकता होती है।

आच्छादन तीन प्रकार के होते है:–

1. **मृदाच्छादन:–** भूमि की जुताई आदि क्रियायें करना।
2. **काष्टाच्छादन:–** वानस्पत्तियों के सूखे अवशेष आदि का प्रयोग।
3. **सजीवाच्छादन:–** अंरवर्तीय फसलें और मिश्रित फसलों का प्रयोग।

इस प्रकार उपरेक्त तीन प्रका के आच्छादन का प्रयोग इस पद्धतिमे करते हैं।

4. वाफसा और बृक्षाकार प्रबन्धन:–

भूमि के अन्दर दो मिट्टी के कणों के बीच जो खाली स्थान होता है उसमें पानी का अस्तित्व विल्कुल नही चाहिये बल्कि उस खाली स्थान में 50 प्रतिशत वाष्प औा 50 प्रतिशत हवा का समिश्रण होना चाहिये इस स्थिति को वाफसा कहते हैं।

वाफसा का निर्माणः–

किसी भी पेड़ पौधे के दोपहर 12 बजे के करीब जो छाया भूमि पर पड़ती है उसके अन्तिम सीमा पर वाफसा लेने वाली जडत्रें होती हैं। इस लिये छाया के सीमा से तना तक मिट्टी चढ़ायें, इस प्रकार जब आप सीमा से छः इंच बाहर पानी देते हैं तो जड़ वाफसा के लिये उस नाली तक जाकर अपने आवश्यकतानुसार पानी लेती हैं। इस प्रकार छः इंच बाहर पानी देने से जड़त्र की लम्बाई बढ़ेगी। अतः तने का आकार बढ़ता है तथा इससे तने की लम्बाई भी बढ़ती है फलतः पेड़ के आकार एवं शाखाओं की संख्या में वृद्धि होती है। इससे पत्ते भी बढ़ते हैं और परिणामतः पत्ते अधिक भोजन का निर्माण करते हैं फलस्वरूप फसल की उपज बढ़ जाती है।

घना जीवामृतः–

इसके लिये प्रति एकड़ 100 किलोग्राम देशी गाय का गोबर (देशी बैल भी हो तो आधा–आधा) + 1 किलोग्राम गुड़ + 1 किलोग्राम बेसन + थोड़ा गो मूत्र लेकर फावड़े से मिलाकर छाया में रख देते हैं तथा इसको 4 दिन बाद उपयोग करते हैं।

भण्डारण के लिये 48/96 घण्टे के बाद इसको कड़ी धूप में पतला स्तर करके अच्छे से सुखायें। इसके बाद लकड़ी के मुंगरे से पीट कर अच्छे से पाउडर बना लें तथा छननी से छानकर एक जूट के बोरी में बॉध कर नमीं से दूर लकड़ी के तख्त आदि पर रखें। इसका प्रयोग एक वर्ष तक कर सकते हैं।

शून्य लागत प्राकृतिक खेती में फसलों की सुरक्षाः–

शून्य लागत प्राकृतिक खेती में पौधा की प्रतिरोधक शक्ति पर जोर दिया जाता है फिर भी शुरूआत में अगर कुछ बीमारियों एवं कीटों आदि की समस्या आती है तो उसका उपचार निम्न तरीके से करते हैंः–

1. **निमास्त्रः–**

200 लीटर पानी + 10 लीटर गो मूत्र + 2 किलोग्राम देसी गाय का ताजा गोबर + 10 किलोग्राम नीम की छोटी–छोटी टहनियॉ, पत्ते समेत टुकड़ों में काट कर घड़ी की सूई की दिशा में धीरे–धीरे घोलें, फिर इसे बोरी से ढक कर छाया में रख दें। दिन में दो बार सुबह–शाम 1 मिनट तक घोलें, 48/96 घण्टे के बाद इसको कपड़े से छानकर भण्डारण करें। इसको सीधे खेत में प्रयोग कर सकते हैं। इससे रस चूसने वाले कीट नियंत्रित होते हैं।

2. **ब्रह्मास्त्रः–**

20 लीटर गो मूत्र + 2 किलोग्राम नीम की छोटी–छोटी टहनी व पत्ते कूटकर चटनी के रूप में डालें। फिर 2 किलोग्राम करंज के पत्ते की चटनी + 2 किलोग्राम शरीफा के पत्ते की चटनी और 2 किलोग्राम अरण्डी के पत्तों की चटनी + 2 किलोग्राम आम के पत्तों की चटनी + 2 किलोग्राम लालटेना के पत्तों की चटनी + 2 किलोग्राम धतूरा के पत्तों की चटनी।

इनमें से कोई पॉच वानस्पत्तियों की चटनी लेकर 20 लीटर गो मूत्र में डालकर धीमी ऑच पर एक उबाल आने तक गरम करें। अब इसे 48 घण्टे तक छाया में रखें। दिन में दो बार धीरे–धीरे घडी की सूई की दिशा में एक मिनट तक मिलायें। अब इसको छानकर भण्डारित कर सकते हैं। भण्डारण के लिये मिट्टी का बर्तन सर्वोत्तम होता है। इसका उपयोग बनाने के दिन से छः महीने तक कर सकते हैं।

200 लीटर पानी में 6 लीटर ब्रह्मास्त्र मिलाकर एक एकड़ खेत में प्रयोग करें। इससे इल्ली सूड़ी नियंत्रित होती है।

3- **अग्नि–अस्त्रः–**

20 लीटर गो मूत्र + 2 किलोग्राम नीम की छोटी–छोटी टहनियॉ पत्तों सहित कूटकर चटनी के रूप में + 1/2 किलोग्राम तीखी हरी मिर्ची की चटनी + 250 ग्राम देशी लहसुन

की चटनी लेकर इसे घोलकर धीरे–धीरे मिलायें। ढक्कन से ढककर धीमी ऑच पर एक उबाल आने तक गरम करें। फिर इसे ढक कर 48 घण्टे छाया में रखें, दिन में दो बार सुबह–शाम घड़ी की सूई की दिशा में घोलें। 48 घण्टे बाद कपड़े से छानकर भण्डारण करें।

इसका उपयोग तीन महीने तक कर सकते है। इसे प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में 6 लीटर अग्निअस्त्र खड़ी फसल पर छिड़काव करें।

4. **फफूँदनाशीः–**
    - प्रति एकड़ 200 लीटर पानी एवं 20 लीटर जीवामृत का छिड़काव करें।
    - प्रति एकड़ 200 लीटर पानी एवं 4 लीटर छॉछ (3 दिन पुराना) मिलाकर छिड़काव करें।

दवाओं के प्रयोग का समयः–

- प्रतिदिन फसल निरीक्षण के दौरान जिस दिन फसल के पत्तों पर कीटों के अण्डे या छोटे–छोटे कीट दिखें तो तुरन्त छिड़काव करें।
- पत्तों के अग्र भाग पर अथवा किनारों पर छोटा सा लाल/पीला/काला धब्बा दिखाई दे तो तुरन्त फफूँदनाशी दवा का छिड़काव करें।

नोटः– इन सबके अलावा भी इस पद्धति में दशपर्णी अर्क, नीम मलहम, सप्त धान्यांकुर अर्क (टानिक/शक्ति वर्धक दवा) आदि का प्रयोग फसल सुरक्षा के रूप में किया जाता है।